गीतः- यह वक्त जा रहा है... ओम शान्ती प्रातः क्लास 13-4-1967

ओम् शान्ती। नम्बरवार पुरुषार्थ-अनुसार रूहानी बच्चों नें इस गीत का अर्थ समझा। नम्बरवार किस लिये कहते हैं कोई तो फर्स्ट ग्रेड में समझते हैं। कोई सैकिंड ग्रेड में कोई थर्ड में समझते है। समझ भी हरएक की अपनी-2 है। निश्चय बुधी भी सबकी अपनी-2 है। बाप तो समझाते रहते हैं। ऐसे ही समझो शिव बाबा इन दवारा डायरैक्शनस दे रहे हैं। तुम आधा कल्प आसुरी डायरैक्शनस पर चलतेआयें हो। अभी ऐसे निश्चय करों तों कि हम ईश्वरिय डायरैक्शनस पर चल रहे है। तो बेड़ा पार हो सकता है। अगर ईश्वरिय डायरैक्शन नही समझा, मनुष्य के डायरैक्शन समझते है तो मूंझ मरेंगें। बाप कहते है मेरे डायरैक्शन पर चलनें सें फिर मैं रैसपान्सीबुल हूं। इन दवारा जो कुछ होता है इनकी ऐक्टिविटी का मैं रैसपान्सीबुल हूं। इसका हम राइट कर देंगें। तुम सिर्फ हमारें डायरैक्शन पर चलों। जो अच्छी रीत याद करेंगें वो ही डायरैक्शन पर चलेंगें। जो याद ही नही करतें है तो वो सिर्फ आसुरी डायरैक्शन पर चलते है। तुम बच्चे भी समझते हो अभी हम कलियुग में आसुरी डायरैक्शन पर थे। अभी हम ईश्वरिय डायरैक्शन पर है। गोया हम संगम पर है। कदम-2पर ईश्वरिय डायरैक्शन पर चलेंगें तो कभी घाटा नही होगा। निश्चय सें ही विजय है। बहुत बच्चे इन बातों को समझते नही है। थोड़ा ही ज्ञान आनें सें देह अभिमान आ जाता है। योग बहुत ही कम है। ज्ञान तो सहज है हिस्ट्री जाग्रफी को जानना। यहां भी मनुष्य कितनी ईसे आदि पढ़ते है कमाल है। तो यह पढ़ाई बहुत सहज है। मेहनत है याद की। कोई कहे बाबा हम योग में बड़े मस्त रहते है। बाबा मानेंगें ही नही। बाबा हरएक की ऐक्टिविटी को देखते है। बाप को याद करनें वालें तो [illegible] सिवलें हुये होंगें। याद नही करते है इसीलिये तो उल्टा सुल्टा काम होता ही रहता है। बहुत रात दिन का [illegible] है। अभी तुम इस सीढ़ी के चित्र पर अच्छी रीत समझा सकते हो। यह इस समय है कांटों का जंगल। यह बगीचा नही है जंगल है। जंगल में आसुरी सम्प्रदाय रहते है। यह है सब जंगली बन्दर। बन्दरों में सें भी बहुत किस्म होती है नां। ऐसा बन्दर जंगल में रहते है। मनुष्यों को भी ऐप्स का टाइटल दिया हुआ है। सन्यासी भी बाहर जंगल में रहते है। वो हैं बड़े ऐप्स। बाप को जानते नही है। मनुष्य अगर अपनी आत्मा और बाप को भी नां जानें तो ऐप्स सें भी बदतर ठहरा नां। तुम्हारें में सें भी बहुत थोड़े है जो अपनें को यथार्थ रीत जानें और यथार्थ रीत बाप को याद करतें हों। बाप कहते है मैं जो हूं जैसा हूं ऐसा समझ कर मुझें याद करें यह बहुत मुश्किल है। बन्दर सम्प्रदाय तो बोर है नां। राम कहा जाता है बाप को। तुम भी बन्दर थें। अब तुमको मन्दिर लायक बनाकर सारें वर्ल्ड को रावण राज्य सें छुड़ातें है। कितनी समझनें की बातें हैं। यह तो क्लीयर समझाना चाहियें कि भारत फूलों का बगीचा था। वैकुण्ठ में क्या जंगली बन्दर रहते है क्या? वहां तो देवी देवतायें रहते है। यहां तो देखो मनुष्य बन्दर सें भी बदतर है। बुधी में आता है यह तो बन्दर ही बन्दर है। कहां चलें? ऐसे बन्दरों सें हम बात नही कर सकते है। यह तो तुम्हारा काम है समझाना। मुझें क्या दरकार पड़ी है मिलनें की। बच्चों में बड़ी युक्ति चाहियें। जबकि इतनी ब्रह्मा कुमार कुमारियां बैठें है तो बाबा बाहर वालों सें क्यों मिलें। बाप तो है हाइऐस्ट आथारटी। प्रजापिता ब्रह्मा भी है हाईऐस्ट आथारटी। यह दोनों है सबसें बड़ी आथारटी। शिव और प्राजापिता ब्रह्मा। आत्मायें है शिव बाबा के बच्चें और साकार में हम भाईबहनें सब है प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चें। यह है सभी का ग्रेट-2ग्रैंड फादर। ऐसी हाईऐस्ट आथारटी के लिये हमको मकान चाहियें। ऐसे तुम लिखों। फिर देखों कि बन्दरों की बुधी में कुछ आता है। शिव बाबा और प्राजापिता ब्रह्मा। आत्माओं का बाप और सभी मनुष्य मात्र का बाप। यह पओइन्ट बहुत अच्छी है समझानें की। परन्तु बच्चे पूरी रीत समझते नही हैं। भूल जातें है। बस ज्ञान की खुमारी चढ़ जाती है, जैसे कि बाप दादा पर भी जीत पा ली है। यह दादा कहतें है मेरी भलें नही सुनों। हमेशा समझों शिव बाबा समझातें है उनकी मत पर चलों। डायरैक्ट ईश्वर मत देते है कि यह करो। रैसपानसीबुल हम है। ईश्वरिय बुधी पर चलों। यह कोई ईश्वर थोड़ेई है। तुमको ईश्वर से पढ़ना है नां। हमेशा समझों यह डायरैक्शन हमको शिव बाबा दे रहे है। जब तक यह नही समझतें है

तब तक रैम्प की निशानी रहेगी। लम्बी पूंछ, छोटी पूंछ रहेगी। बाप कहते हैं पूंछ निकल जानी चाहिये। इसमें
शिव बाबा ही हमको समझाते है। तो यह है कांटों का जंगल। जिसमें ह्यूमन जनावर रहते है। मनुष्य ही
कदरों मिसल है ना। शक्ल तो मनुष्य की ही है। यह ल.न. भी भारत के मनुष्य थे। फिर इनको क्यों नमस्ते
करते है पूजते है? तुम कह सकते हो यह शिवालय के रहने वाले हैं। तुम हो वैश्यालय के रहने वाले। इसमें ड
डूलने की कोई बात नही हैं। बहुत बच्चे है जिनको अपना नशा चढ़ा रहता है। डिफीकल्ट तो पापों में है ना।
जब पूरा योग हो तब विकर्म विनाश हों। विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़ेई है। बाबा
देखते रहते है कि कैसे माया एकदम नाक से पकड़ कर गटर में गिरा देती है। बाप की याद में तो बड़ी
खुशी में प्रफुल्लित रहना चाहिये। सामने रैम आब्जेक्ट खड़ा है। हम यह बन रहे है। भूल जाने से खुशी
का पारा नही चढ़ता है। कहते है हमको नेष्टा में बिठाओ। बाहर में हम याद नही कर सकते है इसलिये हमको
यहां नाक से पकड़ [illegible] कर नेष्टा कराई जाती है क्या? याद में नही रहते है इसलिये बाबा भी कहीं-2 प्रोग्राम भेज
देते है। परन्तु याद में बैठते थोड़ेई है। बुधी इधर उधर भटकती रहती है। बाबा अपनी मिसाल बताते है
कि मैं नारायण का कितना पक्का भक्त था। जहां तहां साथ में नारायण का चित्र रहता था। फिर भी पूजा
के समय बुधी इधर उधर भागती थी। इसमें भी ऐसे ही होता है। बाप कहते है चलते फिरते बाप को याद
करो। बैठने की आदत नही डालो। नही तो सारे दिन में याद नही रहेगा। कहते है बहन नेष्टा करावें।
नेष्टा का तो कोई अर्थ ही नही है। बाबा हमेशा कहते [illegible] याद में रहो। एक जगह बैठ कर याद करने की
टेव नही होनी चाहिये। जो बाबा को कहते है हमको नेष्टा में बिठाओ बिलकुल एक चेष्टा है। कोई-2 ब्राह्मणी
टेव डाल देती है तो बड़ी-2 कहते है हमको नेष्टा में बिठाओ। नेष्टा में बैठे-2 ध्यान में चले जाते है। ना तो
ज्ञान ना याद रहती है। या तो झुटके खाने लगते पड़ते है। बहुतों को टेव पड़ गई है। यह तो अल्पकाल
की शान्ती हो गई। बाकी सारा दिन अशान्ति में रहते है। चलते फिरते बाप को याद नही करेंगे तो
पापों का बोझा कैसे उतरेगा। आधा कल्प का बोझा है। इसमें ही बड़ी मेहनत है। अपने को आत्मा समझ
और बापको याद करना। उनको बाबा भी बहुत लिख भेजते है इतना समय याद में रहते है। परन्तु रहते
नही है। चार्ट को समझते नाहि है। बाबा बेहद का बाप है पतित पावन है। खुशी में रहना चाहिये। ऐसे
नही कि हम तो शिव बाबा के है ना। ऐसे भी बहुत है समझते है हम तो है ना। याद बिलकुल करते
नही है। अगर याद करते होते तो पहले नम्बरवन में आ जाना चाहिये। किसीको समझाने की भी बड़ी
अच्छी बुधी चाहिये। हम तो भारत की महिमा करते है। नई दुनिया में आदी सनातन दैवी देवताओं का
राज्य था। अब है पुरानी दुनिया आयरन ऐजू। वो सुख धाम। यह है दुख धाम। भारत गोल्डन ऐज था तो
इन देवताओं का राज्य था। कहते है कि हम कैसे समझें कि इनका राज्य था। कुछ भी समझते नही है। जैसे
कि रैम्प है। गौ हत्या के लिये कितना करते है। उनको भी लिखना चाहिये कि तुम यह क्या करते हो। श्री
श्री 108 जगत गुरू कहलाते हो तुम्हारा काम है मनुष्यों को सदगती देना। तुम जानवरों पिछाड़ी क्यों लग
पड़े हो। क्या तुम जानवरों के गुरू हो। फिर तुम्हारे फालोवर्स का कौन उधार करेंगे? यह बातें और तो कोई
पूछ नही सकते है, तुम पूछो युक्ति से। यह नालेज बड़ी वण्डरफुल है। [illegible] है, जो जितना
पुरुषार्थ करते है। वो खुद थोड़ेई समझते है कि हम रैम्प है। तुम ऐक्टिविटी से जानते हो। हैं तो कलयुगी
भी मनुष्य सतयुगी भी मनुष्य। फिर उनके आगे जाकर माथा क्यों टेकते है। उनको स्वर्ग का मालिक कहते
है ना। कोई मरते है तो कह देते है फलाना स्वर्गवासी हुआ। यह भी नही समझते है कि इस समय तो सब
नर्कवासी है। तो जरूर पुनर्जन्म भी यहां ही लेंगे। बड़े-2 विद्वान आचार्य आद कुछ नही जानते है। तुम्हारे
में भी जो बहुत तीखे है वो समझ सकते है। बाबा हर एक की चलन से देखते रहते है। बाबा को बहुत
साधारण रीत से कोई-2 बात करनी पड़ती है। सम्भालना पड़ता है। नही तो यह बाबा कैसी जगह पर बैठ

आयें जहाँ ऐसे देख भी नही सकें। परन्तु बाबा कहते है मुझे ऐसे को ही मन्दिर लायक बनाना है। तो जरूर ऐसे देखने पड़ेंगे। बिगर देखे कैसे समझावेंगे। बाप भी ऐसे में ही प्रवेश करते है। जो नम्बरवन मन्दिर लायक बनते हैं। तुम जानते हो एक जंगल के ऐसे में आकर बाप प्रवेश करते है। 5विकार तो सबमें ही है। है ही रावण राज्य। तो यह भी बन्दर थे नां। मनुष्य यह समझते नही है कि हम राक्षस, आसुरी सम्प्रदाय है। जिन्होंमें ज्ञान की धारणा नही होती है वो आसुरी सम्प्रदाय है। कोई आपस में लड़ते है तो कहा जाता है कि यह तो बिल्ले रहते है। एक दो को गाली देते रहते है। बाप बच्चों को यह देते उल्लु का बच्चा। शरूड़ बच्चे जो होते है वो कहते है ओः- आप अपने को उल्लु क्यों कहते है। उल्लु का बच्चा कहने से तुम भी उल्लु बन जाते हो। ऐसे बात करने की होशियारी अभी बाप सिखाते है। मनुष्य तो कुछ नही समझते है। भारत क्या था। और अब क्या बन गया है। भिखारी कहा जाता है तो गुस्सु करते है।

ओः- यह तो गवर्मेन्ट के पेपर में ही निकला है। परन्तु आज कल के जंगली ऐसा समझते थोड़ेई है। घोर जंगल में जनावर ही रहते है। सतयुग को कहा जाता है फूलों का गार्डन। अभी है कांटों का जंगल। जंगली जनावर कांटे बहुत है। बाप कितना क्लीयर करके समझाते है। समझते भी है बात तो बड़ी ठीक है। फिर भी क्यों बड़े-2कांटे बन जाते है। एक दो को दुख देने से कांटे बन जाते हैं। आदत छोड़ते ही नही है। अभी बागवान, माली फूल लगाते है। कांटों को फूल बनाते रहते है। उनका धन्धा ही यह है। जो खुद ही कांटे होंगे तो वो फूल कैसे बनावेंगे। प्रदर्शनी में भी बड़ी खबरदारी से किसीको भेजना होता है। जो अच्छे ज्ञानवान है। तुम तो स्टूडेंट समझते हो। इसमें इनसल्ट की तो कोई बात ही नही है। आपस में सब लड़ते झगड़ते रहते है तो सब जनावर ठहरे नां। सतयुग में यह लक्ष्मी नारायण थोड़ेई लड़ेंगे। जो फूल थे वो फिर कांटे बन जाते है। कांटे फिर फूल की पूजा करते है। बाप कितनी अच्छी रीत समझाते रहते है। अब शिव जयन्ती भी आती है। तुम प्रदर्शनी जास्ती करते रहो। छोटी-2प्रदर्शनी पर भी बैठ समझाओ। ऐवरहेल्दी, ऐवरवेल्थी के मालिक बनो। अथवा पतित भ्रष्टाचारी से पावन श्रेष्टाचारी बनो। एकसेकेंड में जीवनमुक्ति प्राप्त करो। जीवन मुक्ति का भी अर्थ समझते नही है। तुम भी अभी समझते हो। बाप द्वारा सबको जीवनमुक्ति मिलती है परन्तु ड्रामा को भी जानना है। सभी धर्म स्वर्ग में नही आवेंगे। वो फिर अपने-2सेक्शन में चले जावेंगे।

फिर अपने-2समय पर आकर धर्म स्थापना करेंगे। झाड़ में कितना क्लीयर है। सदगती दाता गुरू एक के सिवाय कोई हो नही सकता है। बाकी भक्ति सिखाने वाले तो ढेर गुरू है। सदगती के लिये मनुष्य गुरू हो नही सकते है। श्री-2 108जगत गुरू कहलाने वाले यह सब भक्ति मार्ग के ऐसे है। किस्म-2 के बन्दर होते है। बड़े-2 ऐसे बहुत खौफनाक होते हैं। मनुष्य पहचान से भी वो तीखे होते है। श्री-2 108जगत गुरू कहलाने वाले हरणा कश्यप है। अभी उनका सारा पोल पकड़ा होगा। जगत गुरू का तो काम है सदगती का रास्ता बताना यों कि हडताल कर जीवघाती महापापी बनना। पत्र लिखा है तो भी समझते नही है। बड़े ऐसा है नां। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। समझते नही। देहली में एक को समझाने गये तो वो कहने लगा हम समझना चाहते नहीं हैं। क्या तुम हमको कनवर्ट करना चाहते हो? हम बन्दर से मनुष्य थोड़ेई बनेंगे। यह ख्याल ही नही करो। हम कभी देवता नही बनेंगे। बहुत समझाया। ओः- हम आपको बन्दर से मन्दिर लायक बनाते है। तुम बिगड़ते क्यों हो? बाप कहते है यह है ही बन्दरों की दुनियां। इसमें कदम-2पर बन्दर है। कोई तो बड़े कड़े होते है लड़ने पर भी देरी नही करें। प्रदर्शनी में भी ऐसे ही होता है। कोई तो चित्र फाड़ने लग पड़ते है। आर्य समाजी कितना हंगामा करते है। यह तो अभी ही इनका दयानन्द आया था। जैसे मच्छर जन्मते है और मरते रहते हैं। वैसे ही इनका भी होता है। कोई ताकत ही नहीसिर्फ हंगामा करने की ताकत है। थोड़े टाईम के हैं। झाड़ में दिखाना चाहिये तुम्हारा पार्ट ही क्या है। तुम्हारे में ताकत ही कहां है। एक दो जन्म लिये है मच्छरों सदृश चले जावेंगे। तुम बच्चे तो कितना ऊंच बनते हो। वहां कब अकाले मृत्यु नही होती है ओम